छत्रपति शिवाजी महाराज

छत्रपति शिवाजी महाराज भारत के महान मराठा शासक थे, जिनका जन्म 19 फ़रवरी 1630 को शिवनेरी किले (अब महाराष्ट्र में स्थित) में हुआ था। वे मराठा साम्राज्य के संस्थापक और पहले छत्रपति के रूप में प्रसिद्ध हैं। शिवाजी महाराज ने अपनी उत्कृष्ट प्रशासनिक और सैन्य नीतियों के कारण भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। शिवाजी महाराज ने 1674 में रायगढ़ किले में छत्रपति के रूप में राज्याभिषेक किया और अपने शासन में न्याय, प्रशासन और सैनिक संगठन में कई सुधार किए। उनका योगदान विशेष रूप से स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीक के रूप में अहम है, क्योंकि उन्होंने मुगलों और अन्य विदेशी आक्रमणकारियों के खिलाफ संघर्ष किया और भारतीय भूमि की स्वतंत्रता की रक्षा की। उनकी सबसे बड़ी विशेषता उनकी युद्ध रणनीतियाँ, वीरता, दूरदृष्टि और लोककल्याण के प्रति समर्पण था। उनका नेतृत्व और सिद्धांत आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं।

सत्रहवीं सदी का भारत घोर निराशा से ग्रस्त था। दिल्ली की केन्द्रीय हिन्दू सत्ता सन् 1193 समाप्त हो चुकी थी और पठान, लोदी, खिलजी, तुगलक आदि सम्राटों के बाद अब वहाँ मुगल वंश गद्दी पर था। उधर भारत पूरी तरह जीतने के बाद मुसलमानों ने दक्षिण के देवगिरि, वारंगल, द्वारा समुद्र, चोल, पांड्य आदि साम्राज्यों को नष्ट किया। लगभग दो सौ वर्ष तक स्वतंत्रता की ज्योति जीवित रखने के बाद विजयनगर का साम्राज्य नष्ट हो गया। दिल्ली के मुगल बादशाह और दक्षिण में वीजापुर, गोलकोण्डा, ग्रहमदनगर के सुलतान प्रारम्भ में देश की बहुसंख्य हिन्दू जनता से कुछ उदारतापूर्ण बरताव करते थे पर शाहजहां के समय तक परिस्थिति बदल चुकी थी। ये बादशाह और सुलतान अपनी हिन्दू प्रजा से घृणा करने लगे थे और उसके धार्मिक विचारों का अनादर मन्दिर तोड़ना, बल- पूर्वक मुसलमान बनाना, और हिन्दुओं को तरह-तरह से कष्ट देना मामूली बात हो गई थी। अपनी दुर्दशा से छुटकारा पाने का कोई रास्ता हिन्दू जनता को दिखाई न देता था। बार बार की असफलता ने उसे निराश कर दिया था। लोग यह समझने लग गए थे कि राज्य मुसलमानों का ही होगा, हिन्दुओं का काम केवल सेवा करना है। मानसिंह, जयसिंह और जसवन्तसिंह जैसे वीर राजा, टोडरमल जैसे कुशल प्रबन्धक, वीरबल जैसे बुद्धिमान पुरुष, सबने अपना जीवन सेवा में ही व्यतीत किया। स्वतंत्र होने की कभी इच्छा उनके मन में आई हो इसका कोई सबूत नहीं मिलता। भारत की जनता अत्याचार से पीड़ित थी पर प्रतिरोध करने की उसकी शक्ति और इच्छा लगभग नष्ट हो चुकी थी।

पर अपने लगभग पचास वर्ष के जीवन में ही छत्रपति शिवाजी ने निराशा का यह अंधकार दूर कर दिया। मुगल साम्राज्य और बीजापुर की शक्तिशाली सेनाओं से आजीवन संघर्ष कर उन्होंने उस मराठा साम्राज्य की नींव डाली जो बाद में सारे उत्तर भारत में फैल गया। मामूली किसानों की सेना खड़ी कर उन्होंने मुगल और बीजापुर की सुसज्जित सेनाओं के छक्के छुड़ा दिए | युद्ध शास्त्र में नए तरीके अपनाए जिससे छोटे कद के मराठे भारी भरकम शरीर के पठानों पर विजय पा सकें। उन्होंने अपनी बुद्धि से हार को भी जीत में बदल दिया 1 वीर योद्धा और कुशल सेनापति होने के साथ-साथ वे राजनीति और कूटनीति के भी मँजे हुए खिलाड़ी थे। उनके राज्य के प्रबन्ध में जो सिद्धान्त अपनाए गए थे वे तब तक भारत के लिए तो क्या विदेशों के लिए भी नए थे।

छत्रपति शिवाजी हिन्दू जाति के रक्षक, वीर, तपस्वी और गोब्राह्मण प्रतिपालक थे। उनकी वीरता ने मयूर सिंहासन के अधिपति तक को कँपा दिया था। उदारता की तो वे मूर्ति थे, यहां तक कि एक बार उन्होंने अपना सम्पूर्ण राज्य अपने गुरु समर्थ रामदास के चरणों में दान कर दिया था, किन्तु गुरु ने उन्हीं को अपना प्रतिनिधि बनाकर राज्य सौंप दिया था। शिवाजी मरते दम तक भरत सदृश पवित्र थाती की तरह राज्य की रक्षा करते रहे। सच्चरित्रता के प्रमाण स्वरूप उनके जीवन की वे घटनायें हैं जिन्हें उनके दुश्मन मुसलमान इतिहासकार तक लिख कर प्रशंसा कर गये हैं। ऐसे महान पुरुष के जीवन- चरित्र का अनुसरण भारत के प्रत्येक बालक, बृद्ध, युवा 'देशभक्त को करना चाहिए। वे पहिले भारतीय शासक थे जिन्होंने नौसेना के महत्व को पहिचाना | कुछ ही वर्षों में उन्होंने जिस नौसेना का निर्माण किया उससे भारतीय ही नहीं अंग्रेज और पुर्तगाली भी डरते थे। जब यह नौसेना नष्ट हुई तभी अंग्रेजों के पैर इस देश में जम पाए।

छत्रपति शिवाजी ने सारे जीवन मुसलमान शासकों से युद्ध किया लेकिन व्यक्तिगत रूप से वे मुसलमानों के शत्रु न थे। उनकी लड़ाई अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध थी। उनके राज्य में धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता था। हिन्दू साधुओं का ही नहीं वे मुसलमान सन्तों का भी यादर करते थे। मन्दिर और मस्जिद दोनों को उनसे दान मिलता था। सन्त रामदास और सन्त तुकाराम के वे भक्त थे तो दूसरी ओर बावा याकूत के भी मुरीद थे |

उनके राज्य में और सेना में सभी जातियों के हिन्दुत्रों के अतिरिक्त मुसलमान भी बड़े-बड़े ओहदों पर थे। उनके निजी सचिव थे काजी हैदर। नौसेना में दौलत खां उच्च पदाधिकारी थे तो स्थल सेना में थे सिद्दी हिलाल। जिन किलेदारों पर उनका पूर्ण विश्वास था उनमें मुहम्मद सिद्दीक भी थे। जव छत्रपति शिवाजी अफ़ज़ल खाँ से मिलने गए तो जो दस अंग रक्षक उनके साथ गए उनमें एक थे शेख इब्राहीम। उनका निजी सेवक मनारी मेहतर मुसलमान था और उसने श्रीरंगजेब के चंगुल से बच निकलने में उनकी पूरी सहायता की थी। इससे स्पष्ट हो जाता है कि उनमें मुसलमानों के प्रति कोई द्वेष की भावना न थी। इतना ही नहीं उनके अनन्य भक्तों में मुसलमान भी थे और शिवाजी को उनका पूरा विश्वास प्राप्त था।

छत्रपति शिवाजी का धार्मिक दृष्टिकोण उदार था । वलपूर्वक या प्रलोभन देकर जिन हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जाता था उनमें से जिन्होंने चाहा उन्हें फिर हिन्दू समाज में सम्मिलित करने का प्रयास शिवाजी ने ही प्रारम्भ किया। वजाजी निम्बालकर और नेताजी पालकर इसके उदाहरण हैं। हिन्दू होने के बाद इन लोगों को फिर प्रतिष्ठा मिले इसका वे पूरा ध्यान रखते थे। लड़ाई समाप्त होते ही वे बैर भूल जाते थे। मृत शत्रु के शव का आदर करते थे। स्त्रियों पर अत्याचार न करने के लिए उन्होंने सेना को कड़े आदेश दिए थे। उस समय के समाज में यह नई बात थी क्योंकि अक्सर मुसलमान शासक मृत शत्रु की लाश और उसके स्त्री और बच्चों के साथ बड़ी निर्दयता से पेश आते थे।

मराठी में राजकाज चल सके इसलिए उन्होंने नए कोश का संकलन कराया। भूषण और परमानन्द जैसे हिन्दी कवि और गंगाभट्ट जैसे विद्वानों को उन्होंने प्रोत्साहन दिया। सफल सेनापति, योग्य शासक, एवं कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में वे अद्भुत थे और संसार के महान पुरुषों में उनकी गणना की जा सकती है। पर उनका सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने भारत के इतिहास को नया मोड़ दिया और सोए हुए देश को जागृत कर उसे प्रांत्मसम्मान और आत्म- विश्वास दिया। लगभग छः सौ वर्ष की पराजय और अपमान की परम्परा को तोड़ने और विजय की परम्परा स्थापन करने का श्रेय उन्हीं को है । उनका राज्याभिषेक भारत के इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है । कई सौ वर्ष के बाद एक ऐसे राजा का राज्याभिषेक हुआ था जिसका राज्य किसी दूसरे के अधीन न था। उसका आधार था उसका बाहुवल और उसके देश वासियों का प्रेम | स्वतंत्रता की जो ज्योति उन्होंने जलाई उससे सारा देश आलोकित हो उठा। मराठा साम्राज्य के अलावा बुन्देलखण्ड में राजा छत्रसाल को भी उन्हीं से प्रेरणा मिली। पंजाब में सिख साम्राज्य की स्थापना तभी सम्भव हो सकी जब शिवाजी और मराठों ने मुगल साम्राज्य को जर्जर कर दिया।

छत्रपति शिवाजी का सारा जीवन देश प्रेम, न्यायप्रियता, साहस, वीरता और धैर्य का एक महान पाठ है। आज्ञाकारी पुत्र, वीर सेनापति, कुशल शासक इन सबका उनमें ग्रद्भुत मिलाप था। स्वतंत्र भारत जिन ग्रादर्शों को मानता है उन्हीं के लिए उन्होंने सारा जीवन व्यतीत किया। उनके जीवन से हमें बहुमूल्य सवक और प्रेरणा मिलती है जिस देश में या जिस समाज में जो चिरस्मरणीय कीर्त्तिवान लोग उत्पन्न होते हैं, वे ही उपदेश वा समाज के रत्न वा गौरव माने जाते हैं। और उन्हीं से उस समाज की शोभा होती है क्या शिवाजी ऐसे बीर हम लोगों के गौरव नहीं हैं ? अवश्य हैं। जिस समय उस वीर पुरुष के इतिहास को पढ़ते हैं तो अबलों उस अतीतकाल की घटनायें चित्र सी नेत्रों के आगे झलक जाती हैं। हृदय में आनन्द और उत्साह उमग आता है, शरीर पुलकित और रोमाञ्चित हो जाता है।

भूषण ने छत्रपति वीर शिवाजी महाराज के युद्ध वर्णन का बड़ा ही सजीव और स्वाभाविक वर्णन किया है। युद्ध के उत्साह से युक्त सेनाओं का रण प्रस्थान युध्द के बाजों का घोर गर्जन, रण भूमि में हथियारों का

घात-प्रतिघात, शूर वीरों का पराक्रम और कायरों की भयपूर्ण स्थिति आदि दृश्यों का चित्रण अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है-

साजि चतुरंग वीर रंग में तुरंग चढ़ि।
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।।
भूषन भनत नाद विहद नगारन के।
नदी नद मद गैबरन के रलत हैं।।
ऐल फैल खैल भैल खलक में गैल गैल,
गजन की ठेल-पेल सैल उसलत हैं।
तारा सों तरनि घूरि धरा में लगत जिम,
धरा पर पारा पारावार ज्यों हलत हैं।